

# Το Μαργούδι κι ο Αλεξανδρής

Θράκη, Μαντηλάτος



**A**

1 2 1 1 1 1 3 1 1 1 1 0 0 0 1 1 1 1 0 0 0 0 1 1 1 0 1 1 1 0 1 2 1 1 1 1 3

6 1 1 1 1 0 0 0 1 1 1 1 0 0 0 5 5 5 5 5 2 0 2 3 1 1 1 0 0 0 5 5 5 0

**B**

9 0 0 0 1 3 5 1 1 1 1 1 5 1 3 3 3 1 1 5 0 0 0 1 3 5 1 1 1 1 1 5 1 3 3 3 1 0

1α. Το Μαργούδι κι Α - λέ - ξαν - δρής, Το Μαργούδι κι Α - λέ - ξαν - δρής

**Γ**

15 1 1 1 0 1 1 5 0 5 5 5 0 1 3 3 3 1 0 1 1 1 0 1 1 5 0 5 5 5 2 5 5 5 5 5 5 5 0

βγαί - νουν στην αυ - λή κρυ - φά κρύ - φά, βγαί - νουν στην αυ - λή κρυ - φά κρύ - φά,

21 1 1 1 0 1 1 5 0 5 5 5 0 3 1 1 3 1 0 1 1 1 0 1 1 5 0 5 5 5 2 5 5 5 5 5 5 5 0

βγαί - νουν στην αυ - λή κρυ - φά κρύ - φά, βγαί - νουν στην αυ - λή κρυ - φά κρύ - φά.

*D.C.  
al Fine*

1. Το Μαργούδι κι Αλεξανδρής  
βγαίνουν στην αυλή κρυφά κρυφά.
2. Τσ' είδγι γειτουνιά και πουσπουρίζ',  
τσ' είδγι μάνα της κι μουρμουρίζ'.

3. Συ 'πα βρε Μαργούδι μ' να μη βγαίν'ς  
έξω στην αυλή κρυφά κρυφά.
4. Άμα θέλεις μάνα, δείρι μι,  
πάλι εγώ θα βγαίνω στην αυλή,  
για να βλέπω τον Αλεξανδρή.